प्रोफ़ेसर सै० मुज़फ़्फ़र हसन साहब जौनपुरी

सूरए माएदा की आयत नम्बर 3 में निस्फ़ के बाद है: ''आज मैंने तुम्हारे लिए दीन को पूरा कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी और तुम्हारे लिए 'इस्लाम' को दीन के तौर पर पसन्द कर लिया।

हज्जतुल विदाअ़ की वापसी पर जब पैग़म्बरे इस्लाम[स०] ने ख़ुदा के इरशाद के मुताबिक़ रिसालत का हक़ बहुत ही होशमन्दी और एहतियात के साथ उस वक़्त के तबलीग़ी तरीक़ों को काम में लाने के बाद अली[अ०] की विलायत का एलान करके अदा कर दिया तो सनद के तौर पर ये आयत नाज़िल हुई, यानी दीन अज़मत, सरबलन्दी और अहकाम के पूरा होने और क़वाएद के लेहाज़ से पूरा हो गया। इसके नतीजे में नेमतें पूरी हुईं और इस्लाम पूरे तौर पर ज़िन्दगी के क़ानूनों की सूरत में एक दीन बन गया। जैसे अब कोई नया हुक्म नाज़िल न होगा, बल्कि कुरआनी उसूल की रौशनी में ततबीक़ के गोशे बेनक़ाब किये जाएंगे। नुबुव्वत और रिसालत पर ख़ातमियत की मुहर लगने के बाद इमामत का दौर शुरु होगा जिसका मन्सबी फ़र्ज़ होगा दीन की हिफ़ाज़त और ये सिलसिला क़यामत से मिल जाएगा इस तरह कि बारहवें इमाम[अ०] ख़ुदा के हुक्म से ग़ैब के पर्दे में रह कर ज़माने के अऔलम के ज़रिये हिदायत के फ़राएज़ अन्जाम देते रहेंगे। इस आयत पर तफ़सीरे फ़ुरात इब्ने इब्राहीम कूफ़ी में इस तरह रौशनी डाली गयी है।

अल्लाह के रसूल[स०] ने फ़रमाया कि ग़दीरे ख़ुम का दिन मेरी उम्मत की सभी ईदों से अफ़ज़ल है। ये वह दीन है जब अल्लाह तआला ने मुझे अपने भाई अली बिन अबी तालिब[अ०] को मेरी अपनी उम्मत के लिए रहनुमा तय करने का हुक्म दिया ताकि लोग मेरे बाद उनसे हिदायत हासिल करें, और यही वह दिन है जब अल्लाह ने दीन को पूरा किया और इसी दिन मेरी उम्मत के लिए नेमतों को पूरा किया और उनके लिए इस्लाम को दीन के तौर पर पसन्द किया।

''फ़ुरात बिन इब्राहीम कूफ़ी'' के बारे में सैय्यिदुल उलमा मौलाना सै० अली नक़ी साहब मुजतहिद ने अपनी किताब ''मुक़द्दम-ए-तफ़सीरे क़ुरआन'' मतबूतआ इदार-ए-इल्मिया (पाकिस्तान) लाहौर के पेज 154 पर लिखा है:

''फ़ुरात बिन इब्राहीम कूफ़ी ये भी बिल्कुल उसी ज़माने में थे, शैख़ अली बिन बाबवैह ने इनसे भी अहादीस ली थीं। इनकी तफ़सीर ज़्यादातर उन हदीसों के मज़मून पर मुशतमिल हैं जो अइम्मए मासूमीन के फ़ज़ाएल व मनाक़िब में नाज़िल हुई हैं। अल्लामा मजलिसी ने बिहार में लिखा है कि तफ़सीरे फ़ुरात बिन इब्राहीम के मुताल्लिक़ अगरचे उलमा ने कोई इज़हारे ख़याल नहीं किया है, लेकिन इन अहादीस का उन अख़बार के मुताबिक़ होना जो हमें दूसरे ज़रियों से अइम्मए मासूमीन की तरफ़ से पहुँचे हैं, इसके मुसन्निफ़ के भरोसे के गवाह हैं। इस इबारत को देखते हुए ऊपर दी हुई हदीस की अहमियत बहुत बढ़ जाती है और हुज़ूर का ये इरशाद फ़रमाना कि ''ग़दीरे ख़ुम का दिन मेरी उम्मत की सभी ईदों से अफ़ज़ल है, मोमिन के दिल को न ख़त्म होने वाली तक़वियत बख़्शता है''।

हुज़ूरे अकरम[स०] ने अगरचे रिज़ाए इलाही के

लिए अपने वतन यानी मक्के को छोड़ा था और मदीने को आबाद किया था, लेकिन फ़ितरी ज़रूरत की बुनियाद पर वतन की याद सताती रहती थी। क्यों न हो? आख़िर वतन, वतन है और सफ़र, सफ़र है, चुनानचे जब हज फ़र्ज़ किया गया तो हुज़ूर के दिल की कली खिल उठी और आपने इस फ़रीज़े को पूरा करने की तैयारी शुरु कर दी। शौक़ का ये इसरार था कि वक़्त अपना दामन समेट ले ताकि इन्तिज़ार की घड़ियाँ ख़त्म हो जाएं।

हुज़ूर[स०] का हज का इरादा जब ईमान वालों को मालूम हुआ तो वह रसूल की मुहब्बत और हज के फ़र्ज़ को पूरा करने की दोहरी सआदत हासिल करने की ग़रज़ से परवानों की तरह मदीने की तरफ दौड़ पड़े। देखते ही देखते मदीने के चारो तरफ एक लाख से ज़्यादा का मजमा हो गया और हर तरफ़ ख़ेमे ही ख़ेमे नज़र आने लगे।

25वीं ज़ीक़ादा 10हि० को हुज़ूर[स०] पाकीज़ा ख़ुशबूदार माहौल में ज़ोहर की नमाज़ अदा करने के बाद अपने ख़ानदान को लिये मदीने के बाहर आए और जांनिसारों के अज़ीमुश्शान व अज़ीमुल मरतबत क़ाफ़ले को लेकर मक्क-ए-मुअज़्ज़मा की तरफ़ रवाना हुए ऐसा क़ाफ़ला ज़मीनो आसमान ने कभी न देखा था। क़ाफ़ला सालार अम्बिया व रसूलों का सरदार और क़ाफ़ले वाले पाक दिल और पाक बातिन, तादाद में लाख से ज़्यादा और सालार की पैरवी में एक दिल और एक जान ''लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक'' की गूँज मैदानों, घरों, पहाड़ों और जंगलों को तौहीद के नग़मों से भरती हुई।

उस वक़्त हज़रत अली[अ०] यमन में थे, चुनानचे आप भी हज की ग़रज़ से मक्के में आए, अकेले नहीं बल्कि हज करने वालों का एक बहुत बड़ा क़ाफ़ला लेकर। ये दोनों क़ाफ़ले जब एक हुए तो शान व शौकत देखने के क़ाबिल थी।

हुज़ूर ने जो रास्ता इख़्तियार किया और जहाँ-जहाँ ठहरे, तारीख़ ने सबको अपने सीने में महफ़ूज़ कर लिया। यलमलम, शर्फ़ुस्सियालह, अर्क़े अन्तबिया, अररौहा, मुन्सरिफ़, मुतअश्शी, इसाबा, मन्ज़िले अरज, लहिये जमल, सक़िया, अबवा, हजफ़ा, क़दीद, अफ़ान, मुर्ररुज़्ज़ोरान, सरफ़, इन सबको ये इज़्ज़त मिली कि यहाँ के ज़र्रों ने इन क़ाफ़ले वालों के क़दम चूमे जिनका क़ाफ़ला सालार वह था जिसके लिए अल्लाह ने काएनात बनायी। अल्लाह के उन मुक़द्दस बन्दों को रसूल की मुहब्बत में हज का फ़रीज़ा अदा करने की वह सआदत नसीब हुई जो उनके लिए हमेशा फ़ख़्र का सरमाया रही। हुज़ूर[स०] ने सफ़र के बीच कई ख़ुतबे दिये जिन्हें सुन-सुन कर ईमान में ताज़गी और शगुफ़्तगी आयी। इन्हीं ख़ुतबों में एक ख़ुतबा वह भी है जिसमें आपने इरशाद फ़रमाया थाः यानी ''मैं तुम्हारे दरमियान दो क़ीमती चीज़ें छोड़े जाता हूँ, अल्लाह की किताब और अपनी इतरत (यानी) मेरे अहलेबैत[अ०]। जब तक तुम इन दोनों से जुड़े रहोगे, मेरे बाद गुमराह नहीं होगे और ये दोनों एक दूसरे से अलग नहीं होंगे, यहाँ तक कि हौज़े कौसर पर मुझ से आ मिलें।

अल्लाह के आख़री नबी व रसूल[स०] ने साफ़-साफ़ बता दिया कि इस्लाम की ताज़गी और ईमान की पुख़्तगी के लिए ज़रूरी है कि क़ुरआन और अहलेबैत से जुड़े रहो। अगर ऐसा न हो तो ईमान की ख़ैर नहीं। सिर्फ़ क़ुरआन या सिर्फ़ अहलेबैत से ताल्लुक़ काम नहीं देगा और ये तरीक़ा अल्लाह के आख़री रसूल[स०] की मुख़ालेफ़त पर होगा।

हुज़ूर[स०] जब हज के लिए रवाना हुए थे तो मुसलमानों की बड़ी तादाद आप[स०] के साथ थी, और जब हज के अरकान अदा करने के बाद आप लौटे हैं तो लोगों की तादाद में हज़ारों का इज़ाफ़ा हुआ, जैसे अज़मत व जलालत ने अल्लाह की ज़बाने हाल से एतेराफ़ किया।

ये क़ाफ़ला ज़माने की चलत-फिरत को रौंदता हुआ लौट रहा था कि पैग़म्बरे आख़िरुज़्ज़माँ[स०] पर रुक-रुक कर वही नाज़िल हुई।

''ऐ रसूल[स०]! पहुँचा दो वह सब जो तुम पर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से नाज़िल हुआ है, और

अगर तुम ने ऐसा न किया तो उसके पैग़ाम को पहुँचाया ही नहीं और अल्लाह तुमको लोगों से बचाए रखेगा। यक़ीनन अल्लाह काफ़िर लोगों को रास्ता न देगा।''

ख़िताब कितना बलीग़ है! रसूल[स०] कह कर मुख़ातब किया जा रहा है। इसके बाद ज़ोर दिया जा रहा है कि जो कुछ तुम पर नाज़िल किया गया है, उसे पहुँचा दो। कोई सराहत नहीं है और सराहत की ज़रूरत भी क्या थी, क्योंकि जिससे ख़िताब किया गया है वह अच्छी तरह जानता है फिर और ज़ोर ये दिया गया कि अगर तुम ने ऐसा नहीं किया तो रिसालत का काम ही अन्जाम नहीं दिया इसके बाद हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी ख़ुदावन्दे आलम ने अपने सर ली और आयत के आख़िर में ये क़ाएदा बयान किया गया कि यक़ीनन अल्लाह काफ़िरों को रास्ता नहीं देता।''

इस तरह की आयतें क़ुरआने हकीम में जगह-जगह हैं कि जहाँ शाने नुज़ूल जाने बिना बात समझ में नहीं आती और शाने नुज़ूल का इल्म सबसे ज़्यादा हुज़ूर[स०] को था। आप आख़री रसूल थे और क़ुरआने हकीम आपकी रिसालत का ऐसा हमेशा रहने वाला मोजिज़ा था जिसे क़यामत तक बाक़ी रहना था, या फिर शाने नुज़ूल से वाक़फ़ियत उनको थी जो आपके अहलेबैत[अ०] थे और आपकी तबलीग़ी सरगर्मियों में दिलो जान से शरीक थे। इनके अलावा शाने नुज़ूल से वह लोग भी वाक़िफ़ थे जो उनके दामन से जुड़े हुए थे। रहे वह लोग जो अहलेबैत से हदीसें लेना नहीं चाहते थे, उनका इल्म इस सिलसिले में एतेबार के क़ाबिल न था, उनकी नियत साफ़ नहीं थी, वरना अहलेबैत[अ०] से दूर न भागते। वह अपना क़िब्ला अलग बनाना चाहते थे, इसी लिए आय-ए-बल्लिग़ की तफ़सीर में मुअ़्तबर रिवायत वही है जो भरोसे वाले रास्ते से उम्मते मुस्लिमा तक पहुँची।

अल्लामा सै० मुहम्मद हुसैन तबातबाई ताबा सराह की मशहूर व मारूफ़ तफ़सीर ''अल-मीज़ान फ़ी तफ़सीरिल क़ुरआन'' जिल्द-6 पेज-59 का आज़ाद तर्जुमा इख़्तेसार के साथ ख़िदमत में पेश है। ''फ़त्हुल क़दीर'' में इब्ने मसूद के बयान के मुताबिक़ ''या अय्युहर रसूलु बल्लिग़ मा उन्ज़िला इलैइक मिर रब्बिक'' के बाद तफ़सीरी फ़िक़रा यूँ है: ''इन्ना अलिय्यन मौलल मोमिनीन'' यानी ''बेशक अली[अ०] मोमिनीन के मौला हैं'' आगे बढ़कर साहेबे तफ़सीरे मज़कूर लिखते हैं कि ये चन्द हदीसें ''या अय्युहर रसूलु बल्लिग़ मा उन्ज़िला इलैइक मिर रब्बिक'' से मुताल्लिक़ अली[अ०] के हक़ में हैं। और हदीसे ग़दीर यानी ''जिसका मैं मौला हूँ, उसके अली[अ०] मौला हैं''। हदीसे मुतवातिर है और शिया और अहलेसुन्नत दोनों की तरीक़ों से रिवायत हुई है और ये तरीक़े सौ से भी ज़्यादा हैं। इसकी रिवायत सहाबा केराम के बड़े गिरोह ने की है, जैसे बरा बिन आज़िब, ज़ैद बिन अरक़म, अबू अय्यूब अन्सारी, उमर बिन ख़त्ताब, अली बिन अबी तालिब, सलमान फ़ारसी, अबूज़र ग़फ़्फ़ारी, अम्मार बिन यासिर, बुरैदा, साद बिन वक़ास, अब्दुल्लाह बिन अब्बास, अबू हुरैरा, जाबिर बिन अब्दुल्लाह, अबू सईद ख़ुदरी, अनस बिन मालिक, इमरान बिन हुसैन, इब्ने अबी औफ़ा, सअ़्दाना, ज़ौजा ज़ैद बिन अरक़म। ये फ़ेहरिस्त बताती है कि हज्जतुल विदाअ़् की वापसी पर हुज़ूर ने मक़ामे ग़दीर पर अल्लाह के हुक्म को कितने एहतेमाम और इन्तिज़ाम से पूरा किया।

हज के अरकान अदा करने के बाद हुज़ूर[स०] जब ग़दीरे ख़ुम पर पहुँचे तो अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ ''तबलीग़े रिसालत'' का फ़रीज़ा अन्जाम देने के लिए एक प्रोग्राम तैयार किया। ग़दीरे ख़ुम की जगह ऐसी है कि मक्के की वापसी पर सारे क़ाफ़ले को यहाँ आना पड़ता है, फिर यहाँ ये मिस्र, बसरे, कूफ़े और मदीने जाने के रास्ते अलग-अलग हो जाते हैं। ये मक़ाम हजफ़ा के हुदूद में है।

ये क़ाफ़ला जब मक्के से वापस हुआ था तो हाजियों की बड़ी तादाद आगे-आगे थी। हुज़ूर[स०] और उनके साथ चलने वाले दरमियान में थे और आख़िर में फिर हाजियों की एक बड़ी भीड़ थी। हुज़ूर[स०] ग़दीर ख़ुम पर ठहर गये। जो लोग आगे निकल गये थे, उन्हें तेज़ रफ़्तार क़ासिदों को भेजकर वापस बुलाया और जो लोग पीछे रह गये थे उनका इन्तिज़ार किया। इस जगह पर

बबूल के पाँच बड़े पेड़ थे। आपने फ़रमाया कि इनके नीचे कोई न बैठे। जाँनिसारों ने पैग़म्बर[स॰] के इरशाद पर अमल किया। इन पेड़ों के नीचे की ज़मीन गन्दगी से पाक की गयी, आसपास की ज़मीन को भी झाड़ा गया। इतने में ज़ोहर का वक़्त आ चुका था। फ़िज़ा में अज़ान गूँजी। हुज़ूर[स॰] इन पेड़ों के नीचे तशरीफ़ लाए, ज़ोहर की नमाज़ की इमामत की। एक लाख से ज़्यादा तौहीद के परस्तारों ने आप[स॰] के पीछे नमाज़ पढ़ी। धूप की शिद्दत से बचने के लिये लोगों ने अपनी-अपनी चादर का कुछ हिस्सा सर पर डाल रखा था और कुछ ज़मीन पर बिछा लिया था। हुज़ूर[स॰] को आफ़ताब की गर्मी से बचने के लिए लोगों ने बबूल की शाख़ों पर एक चादर तान दी थी। नमाज़ के बाद आप उसकी तरफ़ बढ़े जहाँ ऊँट के कजावों को तले ऊपर रख के एक अज़ीमुश्शान और मिसाली मिंबर बनाया गया था। ये मिंबर बीच में था और मजमा चारो तरफ़। हुज़ूर[स॰] पैग़म्बराना जाहो जलाल के साथ मिंबर पर जलवाअफ़रोज़ हुए, एक निगाह पूरे मजमे पर डाली और फ़सीह व बलीग़ ख़ुतबे की शुरुआत की। पहले हम्दो सना के मोती बिखेरे, फिर वह्यि की ज़बान से इरशाद फ़रमाया ''लोगो! अनक़रीब मैं ख़ुदा के दरबार में बुलाया जाने वाला हूँ और मैं चला जाऊँगा। मुझ से भी पूछताछ होगी और तुम से भी। बताओ! तुम क्या जवाब दोगे? सबने एक ज़बान होकर कहा- ''हम गवाही देते हैं कि आपने रिसालत का पैग़ाम और हमारी भलाई में कोई कसर नहीं छोड़ी। ख़ुदा आपका भला करे।'' इसके बाद फिर आपने फ़रमाया ''क्या तुम गवाही देते हो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं? और ये कि मुहम्मद[स॰] उसके बन्दे और रसूल हैं? और ये कि जन्नत, दोज़ख़ और मौत हक़ हैं? और ये कि क़यामत आकर रहेगी, इसमें कोई शक नहीं? और ये कि ख़ुदावन्दे आलम सबको क़ब्रों से उठायेगा?'' पूरे मजमे ने कहा ''हम इन सबकी शहादत देते हैं'' ये सुनकर आप ने फ़रमाया ''अल्लाह! तू गवाह रहना'' फिर हुज़ूर ने इरशाद फरमाया ''एक बात ग़ौर से सुनो!'' मजमे ने कहा ''इरशाद हो'' आप[स॰] ने फ़रमाया ''मैं हौज़े कौसर पर तुम्हारा इन्तिज़ार करूँगा और तुम लोग हौज़े कौसर पर मुझसे मिलोगे। वहाँ चादी के प्याले सितारों की तादाद के मुताबिक़ होंगे। इसका ख़याल रखना कि मेरे सक़लैन के साथ तुम्हारा सुलूक कैसा है।'' किसी ने पूछा, ''सक़लैन से क्या मुराद है?'' आप[स॰] ने कहा ''सिक़्ले अकबर'', अल्लाह की किताब है जिसका एक सिरा अल्लाह के हाथ में है, दूसरा तुम्हारे पास है। इसको पकड़े रहना, वरना गुमराह हो जाओगे। और ''सिक़्ले असग़र'' मेरी इतरत है। मुझे ख़ुदाए लतीफ़ व ख़बीर ने बताया है कि ये एक दूसरे से जुदा नहीं होंगे, यहाँ तक कि हौज़े कौसर पर मुझ से आ मिलेंगे। तुम उन दोनों से अलग न होना और न उनका हक़ मारना, वरना गुमराह और हलाक हो जाओगे।''

इस अज़ीमुश्शान तमहीद के बाद आप[स॰] ने अली[अ॰] को पास बुलाया, मज़बूती से उनके बाज़ू पकड़े और उन्हें इतना उठाया कि बग़ल की सफ़ेदी दिखायी देने लगी। देखने वालों ने ये मन्ज़र देखा कि अल्लाह के रसूल[स॰], अली[अ॰] को इस तरह उठाये हुए हैं कि सिर्फ़ अली दिखायी दे रहे हैं और हुज़ूर का जिस्म उनके पीछे है।

उलमाए नफ़सियात का ये कहना है कि याद रखने के लिए देखना बड़ी अहमियत रखता है, इसके साथ अगर सुनने की ताक़त शामिल हो जाए तो याद को और ताक़त मिल जाती है इसके आगे का दर्जा दिल की तलब है जिसके असर की हद तैय नहीं की जा सकती। क़ुरआने हकीम में सुन्ने, देखने और बोलने का बयान है जो इसी मतलब को और बेहतर तरीक़े से पेश करता है। अब ग़दीरे ख़ुम का मन्ज़र ख़याल की आँखों से देखिये। पूरा नज़्ज़ारा नज़रों के सामने है। आँखों को मेराज मिल रही है। हुज़ूर[स॰] की आवाज़ दिल की गहराई में उतर कर कानों में रस घोल रही है। इसी मजमे में वह लोग भी है जिनके दिल की धड़कन में मवद्दत उनके साथ है। इन बातों के सिवा जगह के तय करने में इन्फ़ेरादियत है। मिंबर की शान दूसरे मिंबरों से अलग होती है। ख़िताब का अन्दाज़ रूह का खाना बनता

जा रहा है, पेशकश नयी है। क्या ऐसा इन्तिज़ाम और एहतेमाम किसी और मौक़े पर हुआ? तारीख़ हैरान है। हुज़ूर अकरम[स०] ने रिसालत का हक़ अदा कर दिया और हर तरह की हुज्जत पूरी कर दी। इसके बाद भी कोई शक करे तो इसका इलाज तो लुक़मान के पास भी नहीं।

अली[अ०] को बुलन्द करके अल्लाह का रसूल कहता हैः "ऐ लोगो! तुम लोगों मेंसे वह कौन है जो मोमिनों का उनकी जानों से भी ज़्यादा मालिक है?" उन्होंने कहा "उसको अल्लाह जानता है और उसका रसूल" हुज़ूर ने फ़रमाया "अल्लाह मेरा मौला है और मैं मोमिनों का मौला हूँ, और मैं ही उनकी जानों से ज़्यादा उन पर मिलकियत का हक़ रखता हूँ।" इसके बाद आपने फ़ौरन ही बिना किसी रुकावट के फ़रमाया "पस जिसका मौला मैं हूँ, उसके मौला अली हैं" आपने इस जुमले को तीन बार दुहराया और अहमद इब्ने हंबल की रिवायत में है कि चार बार दुहराया। अब आप यहाँ ठहर कर सारे वाक़ेआत को जो मदीने से चलने के वक़्त से शुरु हुए हैं और 'मन कुन्तु मौलाह फ़अलिय्यु मौलाह' को अदा करने तक पहुँचे हैं, दिल में दुहराइये, आयत की शान पर नज़र डालिये। अल्लाह के रसूल[स०] का ग़ौर फ़िक्र करना देखिये! लोगों को पास बुलवा रहे हैं, पीछे रहने वालों का इन्तिज़ार कर रहे हैं, माहौल को शरीक कर रहे हैं, पैग़ाम पहुँचाने के सभी पाये जाने वाले तरीक़े इस्तेमाल कर रहे हैं। क्या कोई कसर बाक़ी रह गयी? नहीं! हरगिज़ नही!

ग़दीरे ख़ुम में है इस शान से इस्लाम का बानी
अदाए फ़र्ज़ के जलवों से है पुर नूर पेशानी

विलायत के एलान के बाद हुज़ूर[स०] के दिल से ये दुआएँ निकलीं "ऐ अल्लाह! दोस्त रख उसको जो इसको दोस्त रखे और दुश्मन रख उसको जो इसको दुश्मन रखे; मुहब्बत कर उस से जो इससे मुहब्बत रखे और दुश्मनी रख उससे जो इससे दुश्मनी रखे; और मदद कर उसकी जो इसकी मदद करे; और ज़लील कर उसको जो इसको ज़लील करे और हक़ को उस तरफ़ फेर दे जिधर ये फिरे।"

इस दुआ के बाद आप ने फ़रमायाः "जो यहाँ हैं, उनका फ़र्ज़ है कि मेरे इस पैग़ाम को उन तक पहुँचाएं जो यहाँ नहीं हैं।"

हुज़ूर के दहने मुबारक से निकली हुई दुआएं क़ुबूल हुईं या नहीं, अगर क़ुबूल हुईं तो अल्लाह ने अली[अ०] को दोस्त रखा, उनके दुश्मन को दुश्मन समझा और ये बात कितनी अज़ीम हुई। और अगर ये दुआएँ क़ुबूल नहीं हुईं तो अल्लाह के रसूल[स०] की कितनी तौहीन हुई, और अल्लाह का वह रसूल जो अल्लाह का महबूब भी है। इसके बाद वह आयत नाज़िल हुई जिसका बयान शुरु में आ चुका है।

अब हुज़ूरे अकरम[स०] ने सभी लोगों से कहा कि जाकर अली[अ०] को विलायत की मुबारकबाद दो। इस काम के लिए आपने एक ख़ेमा लगवा दिया था जिसमें अली[अ०] जाकर बैठे और लोगों ने उनको आकर मुबारकबाद दी। लोग मुबारकबाद दे रहे थे कि "ऐ अबूतालिब के बेटे! मुबारक हो कि आप हर मोमिन और हर मोमिना के मौला हो गये" इस मौक़े पर हुज़ूर[स०] से इजाज़त लेकर हस्सान बिन साबित ने तहनियत का क़सीदा पढ़ा। यहाँ तक तो सारे काम अच्छी तरह अन्जाम पा गये, लेकिन बाद में क्या हुआ, इस पर इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम की नीचे दी हुई हदीस रौशनी डालती है। आप[स०] ने फ़रमायाः "लोगों को दो गवाहों से हक़ मिल जाया करता है, लेकिन अली[अ०] को एक लाख चौबीस हज़ार गवाहों के बाद भी ये हक़ न मिल सका।"

हदीसे ग़दीर को सहाब-ए-मुबारक में से एक सौ दस सहाबा ने नक़्ल किया। सहाबा और ताबईन के बाद हर दौर के अकाबिर उलमा ने इसे नक़्ल किया। पहली सदी तो सहाबा और ताबईन की थी, दूसरी सदी में छप्पन, तीसरी सदी में बान्नवे, चौथी सदी में तेंतालीस, पाँचवीं सदी में चौबीस, छठी सदी में इक्कीस, सातवीं सदी में इक्कीस, आठवीं सदी में दस, नवीं सदी में सोलह, दसवीं सदी में चौदह, ग्यारहवीं सदी में बारह, बारहवीं सदी में चौदह, तेरहवीं सदी में ग्यारह, चौदहवीं सदी में ग्यारह बड़े-बड़े उलमा ने इसकी तस्दीक़ की है।

इन सब की तादाद को अगर जोड़ा जाए तो सहाबा और ताबईन के बाद तीन सौ साठ तक पहुँच जाती है। हदीसे ग़दीर पर यूँ तो बहुत सी किताबें लिखी गयी, मगर अब्दुल हुसैन अहमद अल-अमीनी नजफ़ी की तालीफ़ ''अल-ग़दीर फ़िल किताबि वस्सुन्नह वल-अदब'' का जवाब नहीं। ये किताब दीनी, इल्मी, फ़न्नी, तारीख़ी, अदबी, अख़लाक़ी है। मेरे इल्म के मुताबिक़ इसकी ग्यारह जिल्दें छप चुकी हैं। मोअल्लिफ़ ने मेहनत, बारीक नज़र, तहक़ीक़ और तलाश और हक़ीक़त निगारी का हक़ अदा कर दिया है। ग़दीरे ख़ुम हमारी पहचान है। इसने हमको हक़ का कल्मा बलन्द करना सिखाया, हमारे दिलों से सलतनत और हशमत का ख़ौफ़ मिटाया। हम जितना इसे दुहराएंगे, उतनी ही मज़बूत मिज़ाजी हासिल कर पाएंगे।

ज़ुलअशीरा की दावत से लेकर ग़दीर ख़ुम तक हुज़ूर[स॰] ने अली[अ॰] की बराबर पहचान करायी और खुले लफ़्ज़ों में सबको बताया कि ये मेरा जानशीन होगा, मेरा नायब होगा, मेरा वसी होगा, और अली[अ॰] ने भी अपने किरदार से साबित कर दिया कि विलायत के मन्सब के यही हक़दार हैं। अपनी पैदाइश से लेकर हुज़ूर[स॰] की वफ़ात तक हमेशा उनके साथ रहे और उनकी ख़िदमत की सआदत हासिल करते रहे। फ़ैज़ हासिल करना अगर कोई चीज़ है तो इसको क़ुबूल कीजिये कि अली[अ॰] ने हुज़ूर से जितना फ़ैज़ कमाया, उतना कोई दूसरा न हासिल कर सका। रहना-सहना, उठना-बैठना, बातचीत-ख़ामोशी, इबादतें-मामलात, सबके बीच रहना-तन्हा रहना, बोलना-लिखना ग़रज़ ज़िन्दगी की हर मामूली से मामूली बात में जो कुछ अली[अ॰] ने सीखा है वह सब हुज़ूर[स॰] ही से सीखा है

रसूल[स॰] वक़्त की तलवार को बदलते हैं
अली[अ॰] मिला के क़दम साथ-साथ चलते हैं

इसको कहते हैं पैरवी, ऐसी होती है पैरवी।

पूछने वाला अगर पूछे कि ग़दीरे ख़ुम में मरकज़ी किरदार किसका था तो इसका जवाब आसान नहीं होगा। देखिये और ग़ौर कीजिये कि हूज़ूर[स॰] को रिसालत की तबलीग़ की सनद लेनी है और अली[अ॰] को इमामे अव्वलीन, वली, वसी-ए-रसूल[स॰] होना है। एहतेमाम कर रहा है अल्लाह का रसूल[स॰], जिसके लिए एहतेमाम हो रहा है, वह अली[अ॰] की ज़ात है। इधर नुबुव्वत की ख़िदमत का सिलसिला है, उधर इब्तेदाए इमामत की बात है; इधर तबलीग़ को कमाल हासिल हुआ है, उधर दीन की हिफ़ाज़त की शुरुआत है। एक दरवाज़ा बन्द हो रहा है और एक दरवाज़ा खुल रहा है, जैसे मरकज़ी हैसियत एक ही हो।

हुज़ूर[स॰] का ये पहला और आख़री हज था। अली[अ॰] हालात का जायज़ा ले रहे थे। अब हुज़ूर की ज़िन्दगी का ज़माना ख़त्म होने वाला है और अली[अ॰] रसूल[स॰] के जानशीन होने वाले हैं।

ग़दीरे ख़ुम के बाद का माहौल बोझल होता जा रहा है। लोग अली[अ॰] को जानते हैं। अली[अ॰] समझते हैं कि ज़माना करवट ले चुका है, ख़यालात बदलते जा रहे हैं। रसूल[स॰] के साथ अली[अ॰] थे, अली[अ॰] के साथ रसूल[स॰], अली[अ॰] जैसा बल्कि उनका दसवाँ हिस्सा भी कोई नहीं। अली[अ॰] को अकेलेपन का एहसास बढ़ता जा रहा है। इक़्तेदार में वह लोग हैं जो अली[अ॰] की बातों को मानते नहीं। दीन के महाज़ पर अली[अ॰] हैं जिनके साथ लोग चल नहीं सकते। कितनी सख़्त और दुश्वार गुज़ार मन्ज़िल है! लेकिन अली[अ॰] ने सभी दुश्वारियों पर क़ाबू हासिल किया। भागने का लफ़्ज़ उनकी डिक्शनरी में नहीं था वह डटे रहे और दीन की ख़िदमत करते रहे।

ग़दीरे ख़ुम ने ज़माने को यही पैग़ाम दिया कि हक़ का बोलबाला रहता है, उसे कभी हार का सामना करना नहीं पड़ता। हुज़ूर[स॰] तबलीग़े रिसालत में पूरी तरह कामयाब रहे और आपने अपने काम को अधूरा नहीं छोड़ा। क़ुरआने हकीम को तैयार किया और अपना जानशीन तय किया, इसी लिए तो क़ुदरत की ज़बान पर आया कि आज के दिन दीन पूरा हुआ, नेमतें पूरी हुईं और इस्लाम दीन के तौर पर ख़ुदा की नज़रों में पसन्दीदा हुआ।